प्रातः क्लास   पिता श्री   ओमशान्ति   25-10-67

रिकार्डः - बचपन के दिन भूला न देना।:- ओमशान्ति। मीठे-मीठे बच्चों ने गीत का अर्थ अच्छी रीत समझा। हम आत्मा हैं और बेहद के बाप के बच्चे हैं।,यह भूला न देना।अभी -अभी बाप की याद में हर्षित होते हैं,अभी अभी फिर याद भूलने से गम में पड़ जाते है।अभी अभी जीते हो अभी अभी मर पड़ते हो।अर्थात अभी अभी बेहद के बाप के बनते हो,अभी-अभी फिर जिसमानी परिवार के तरफ चले जाते हो। तो बाप कहते हैं आज हंसे कल रुला न देना।यह हुआ गीत का अर्थ। * तुम बच्चे जानते हो बहुत जन्म के मनुष्य शान्ति के लिए धक्के खाते हैं।तीर्थ यात्रा आद पर जाते हैं।ऐसे नहीं कि धक्के खाने से कोई शान्ति मिलती है। यह एक ही संगम युग है जब बाप आकर समझाते हैं।पहले-पहले अपन को आत्मा पहचानो तो सही। आत्मा है ही शान्त स्वरूप। रहने का स्थान भी शान्ति धाम है।यहां आते हैं तो कर्म जरूर करना पड़ता है। जब अपने शान्ति धाम में हैं तो शान्त है।सतयुग में भी शान्त रहते हैं।सुख भी है ,शान्ति भी है।शान्ति धाम को सुख धाम नहीं कहेंगे।सुख को सुखधाम, दुःख को दुःख धाम कहेंगे।यह सभी बातें तुम समझ रहे हो। यह सब समझाने लिए। कोई को समझ हो समझाया जाता है। यहां तुम्हारे पास फार्म रखे हुये हैं। प्रदर्शनी में तुम फार्म भराये नब्ज़ देख नहीं सकते हो।घाटे की बात हुई ना।फिर सोच करना होता है क्या करना चाहिए। जब तक फार्म न भरावें तब तक तो कुछ भी पता न पड़े।मुल बात ही यह है कि लौकिक, पारलौकिक बाप कौन है।पारलौकिक बाप कहने से बुधि उपर चली जाती है।क्योंकि अन्दर आत्मा है ना। लौकिक बाप के लिए तो झट कह देते हैं फलाना.. फिर पूछा जाता है तुम्हारे आत्मा का बाप कौन है? तो मुंझ पड़ते।कब कोई कह देते हैं आत्माओं का बाप परम पिता परमात्मा है।तो कहना चाहिए उस बाप से जरूर बेहद का वर्सा मिलना चाहिए।बेहद के बाप को बेहद का सुख शान्ति ही देना है।सभी मनुष्य दुःख में हैं तो चाहते हैं सुख शान्ति हो।प्रदर्शनी में तो यह बातें पूछी नहीं जा सकती। तो क्या करना चाहिए। जब अन्दर घुसे तो पहले पहले बाप का ही परिचय देना है।समझाया जाता है आत्माओं का बाप एक ही है।वह ही गीता का भगवान है।बाकि यह सभी आत्माएं हैं शरीर में।जीव और आत्मा कहा जाता है। आत्मा शरीर छोड़ती है और लेती है।शरीर के नाम ही बदलते हैं।आत्मा का नाम नहीं बदलता।तो पहले2 परिचय देना पड़ता है बाप का।और कोई दे न सके।देहीअभिमानी बनाये न सके।तुम बच्चे समझाये सकते हो बेहद के बाप से ही सुखधाम का वर्सा मिलता है।बाप सुख की सृष्टि(सतयुग)स्थापन करते हैं। बाप दुःख की सृष्टि रचे ऐसे होता नहीं। भारत में इनका(ल०ना०) राज्य था।चित्र भी है।बोलो यह सुख का वर्सा मिलता है। अगर कहे यह तो तुम्हारी कल्पना है , तो एकदम छोड़ देना चाहिए। कल्पना समझने वाले कुछ भी समझेंगे नहीं। इसलिए बोलो हम अपना टाईम वेस्ट करना नहीं चाहते।आप समझ नहीं सकते हो तो वापिस चले जाओ।पहले2 तुम बच्चों को एक ही जगह खड़ा होना चाहिए बाप का परिचय देने। न समझते तो बोलो आप एक बात को ही नहीं समझते हो तो आगे कुछ समझेंगे नहीं।टाईम वेस्ट नहीं करना है। तुम्हारा टाईम बहुत वेल्युएबुल है ना।इस समय सारी दुनिया में तुम्हारे जितना वेल्युएबुल टाईम कोई का है नहीं।बड़2 मनुष्यों का टाईम वेल्युएबुल होता है।बाप का टाईम कितना वेल्युएबुल है।बाप समझाये कर क्या से क्या बना देते हैं।तो बाप तुम बच्चों को भी कहते हैं कि तुम अपना वेल्युएबुल टाईम मत गंवाओ। नालेज पात्र को ही देनी है।पात्र को समझाना चाहिए।सभी बच्चे तो समझ नहीं सकते।इतनी बुधि नहीं जो समझे।पहले2 बाप का परिचय।बाप से ही वर्सा मिलता है।तुम यह नहीं समझते हो कि हम आत्माओं का बाप शिव है।तो आगे कुछ नहीं समझ सकेंगे।बहुत प्यार,नम्रता से समझाये रवाना कर देना चाहिए।क्योंकि आसुरी सम्प्रदाय है ना।बक बक करने देरी नहीं करेंगे।गवर्मेन्ट स्टूडेन्ट की कितनी महिमा करती है। उन्हों के लिए कितनी प्रबन्ध रखते हैं। कालेज के स्टूडेन्ट ही पहले2 पत्थर मारना शुरू करते हैं। जोश होता है ना।बुढ़े वा माताएं तो पत्थर जोर से लगाये न सके।अक्सर कर के स्टूडेन्ट ही शोर

25-10-67 2

फिर चित्र ही चेंज करना पड़े। यह सब बातें बच्चों कर बुधि में रहनी चाहिए। शिव बाबा की महिमा में यह भी अक्षर जरुर डालना है। सिवाय तुम्हारे और कोई तो जानते ही नहीं। तुम समझाये सकते हो गोया तुम्हारी विजय हुई ना। तुम जानते हो बेहद का बाप सर्व का बाप, सब का टीचर, सर्व का सदगति दाता है। बेहद का सुख बेहद का ज्ञान देने वाला है। फिर भी ऐसे बाप को भूल जाते हो। माया कितनी समर्थ है। ईश्वर को तो समर्थ कहते हैं, परन्तु माया भी कम नहीं। तुम बच्चे अभी एक्यूरेट रीति जानते हो। इनका तो नाम ही रखा है रावण। राम राज्य और रावण राज्य। इस पर भी एक्यूरेट समझाना है। राम राज्य है तो जरुर रावण राज्य भी है। सदैव राम राज्य तो हो न सके। रामराज्य श्री कृष्ण राज्य कौन स्थापन करते हैं, यह बेहद का बाप बैठ समझाते हैं। कृष्ण के साथ फिर अर्जुन, द्रौपदी 5 भाई आद आद क्या बैठ लिखा है। कितना खिलाड़ा है। है कुछ भी नहीं। झूठ माना झूठ। सर्व शास्त्र मई शिरोमणि गीता गाई जाती है। तुमको भारत खण्ड की बहुत महिमा करनी है। भारत सचखण्ड था ना। कितनी महिमा थी। बनाने वाला बाप ही है। तुम्हारा बाप के साथ कितना लव है। एम आबजेक्ट बुधि में है। यह भी जानते हो हम स्टुडेन्ट हैं। स्टुडेन्ट को अपनी पढ़ाई का नशा रहना चाहिए। कैरेक्टर्स का भी ख्याल होना चाहिए। विवेक कहते है जब कि गाडली पढ़ाई हैं तो उस में एक दिन भी मिस न करना चाहिए। और टीचर के आने बाद लेट भी न पहुंचना चाहिए। टीचर के बाद आना यह भी एक इनसल्ट है। स्कूल में भी जो पिछाड़ी में आते हैं तो उनको टीचर बाहर में खड़ा कर देते हैं। बाबा अपना छोटेपन का मिसाल भी बताते हैं। हमारा टीचर तो बहुत सख्त था। अन्दर आने भी नहीं देता था। यहां तो बहुत हैं जो देरी से आते हैं। समझना चाहिए बेहद का बाप पढ़ाते हैं और हम देरी से आते हैं, परन्तु इतना डर लगता नहीं है। क्योंकि कोई सजा नहीं है। आपे ही जो करे सो देवता, कहने से सो मनुष्य, कहने से भी जो न करे सो गधा। तुम तो अब देवता बन रहे हो। तो आपे ही पिछाड़ी में बाहर बैठ सुनना चाहिए। बताना चाहिए हम ने आपे ही अपन को सजा दी। यहां तो नम्बरवार भी बिठाये नहीं जाते। कितने ढेर बच्चे आते हैं। जो देवता होगा वह आपे ही ख्याल करेगा। सर्विस करने वाले भल बाबा के सामने बैठें। सपूत बच्चा जरुर बाप को प्यारा लगता है ना। एक दृष्टान्त भी देते हैं एक सन्यासी ने पूछा ... सन्यासियों ने भी दृष्टान्त सब यहां से कापी किये हैं। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारा है। ईश्वरी ज्ञान में इन्टरफेयर कर दिया है। अब हम किसको कहें। वह हठयोगी राज योग कैसे सिखलाये सकते। वह तो कहते हैं स्त्री नागिन है। अगर पवित्र रहना है तो जंगल में जाओ। बस। और कुछ नहीं। उनको तो ब्रह्म को ही याद करना है। नाम ही है ब्रहम योगी ब्रहमज्ञानी। तत्व योगी। तत्व अर्थात ब्रहम का अर्थ एक ही है। जैसे यह आकाश तत्व है वैसे वह ब्रहम तत्व है। अर्थात रहने का स्थान। अब रहने के स्थान को भगवान तो नहीं कह सकते। हिन्दुस्तानी अपन को हिन्दु कहते हैं। हिन्दु तो धर्म है नहीं। पत्थर बुधि हैं ना। युरोप का रहने वाला अगर अपना धर्म युरोप दिखावे तो बाकि क्राईस्ट क्रिश्चन आद कहां गये। यह तो अपने धर्म को ही भूले हुये हैं। बाप आकर समझाते हैं। पूछा जाता है हिन्दु धर्म किसने स्थापन किया। डबे में ठीकरी। अभी तुम समझते हो आदी सनातन देवी देवता धर्म तो यह (देवी देवता) था ना। इनका धर्म कब स्थापन हुआ, जरा भी किसकी बुधि में नहीं है। तुम्हारी बुधि से भी घड़ी2 खीसक जाता है। तुम अब देवी देवता बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। कौन पढ़ाये रहे हैं? खुद परम पिता परमात्मा। तुम समझते हो यह हमारा ब्राहमण कुल है। डिनायस्टी नहीं होती। यह है सर्वोत्तम ब्राहमण कुल। बाप भी सर्वोत्तम है ना। ऊंच ते ऊंच है। तो जरुर उनकी आमदनी भी ऊंची होगी। उनको ही श्री श्री कहते हैं। तुमको भी श्रेष्ठ बनाते हैं। तुम बच्चे ही जानते हो कि हमारे को श्रेष्ठ बनाने वाला कौन है। और कोई कुछ भी नहीं समझते। तुम कहेंगे हमारा बाप भी है, टीचर भी है, सदगुरु भी है। हमको पढ़ाये रहे हैं। हम आत्मा हैं हम आत्माओं को बाबा ने स्मृति दिलाई है कि तुम हमारे सन्तान हो। ब्रदरहुड है ना। बाप को याद भी करते हैं समझते हैं वह हमारा निराकारी बाप है तो जरुर आत्मा

25-10-67

3

भी निराकार ही कहेंगे। बाबाने समझाया है आत्मा एक ही शरीर छोड़ दूसरा लेती है। फिर पार्ट बजाती है। मनुष्य फिर आत्मा के बदले। अपने को शरीर ही समझ लेते हैं। मैं आत्मा हूं यह भी भूल जाते हैं। मैं तो कब भूलता नहीं हूं। तुम आत्मायें सब हो शालीग्राम। मैं हूं परम आत्मा माना परमात्मा। उनके उपर कोई दूसरा नाम है नहीं। उस परमात्मा का नाम है शिव। हो तुम भी ऐसे आत्मा परन्तु तुम सब शालीग्राम हो। शिव के मंदिर में जाते हैं वहां भी शालीग्राम बहुत होते हैं। शिवलिंग की पूजा करते हैं तो शालीग्राम की भी पूजा कराते हैं। तब ही बाबा ने समझाया है ताकि तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनो की पूजा होती है। हमारी तो सिर्फ आत्मा की होती है। शरीर है नहीं। तुम कितना ऊंच बनते हो। बाप को तो खुशी होती है ना। बाप गरीब होता है। बच्चे पढ़ कर कितना चढ़ जाते हैं। क्या से क्या बन जाते हैं। बाप भी जानते है तुम कितना ऊंच थे। अब कितने आरफन बन गये हो। बाप को ही नही जानते। अभी तुम बाप के बने हो तो विश्व के मालिक बन जाते हो। बाप कहते हैं मुझे कहते ही हैं हेविनली गाड फादर। यह भी तुम जानते हो स्वर्ग की स्थापना हो रही है। वहां क्या क्या होगा यह तुम्हारे सिवाय और कोई की बुधि में होगा ही नही। तुम्हारी ही बुधि में है हम विश्व के मालिक थे अब फिर बन रहे हैं। प्रजा भी ऐसे कहेंगी ना। हम मालिक हैं। यह बातें तुम बच्चों की ही बुधि में हैं। तो खुशी रहनी चाहिए ना। यह बातें सुन कर। फिर दूसरों को भी सुनानी हैं। इसलिए सेन्टर्स, प्रदर्शनी, म्युजियम आद निकलती रहती हैं। जो कल्प पहले हुआ है वह ही होता रहेगा। म्युजियम सेन्टर के लिए तुमको बहुत आफर करेंगे। फिर बहुत निकल पड़ेंगे। सभी का हड्डियां नरम होती जाती हैं। तुम्हारी योग में कितनी ताकत जबरदस्त हैं। बाप कहते हैं तुम्हारे में ताकत बहुत हैं। भोजन तुम योग में रह खाओ। खिलाओ तो बुधि इस तरफ खैंचेगी। भक्ति मार्ग में तो गुरुओं के जूठा आद भी खाते थे। तुम बच्चे समझते हो भक्ति मार्ग का किताब तो बहुत हैं। उसका वर्नन नहीं कर सकते। बीज और झाड़ है इसका वर्नन कर सकते हैं। बाकि कोई को बोलो झाड़ के पत्ते गिनती करो तो कर सकेंगे? नहीं। अथाह पत्ते होते हैं। बीच में तो पत्ते की निशानी भी दिखाई नहीं पड़ती। वन्डर है ना। इनको भी कुदरती कहेंगे। जीवजन्तु कितने वन्डरफुल हैं। अनेक प्रकार के जीव हैं। कैसे पैदा होते हैं बहुत वन्डरफुल चीज़ हैं। इसको कहा जाता है नेचर। यह भी बनाया हुआ खेल है। सतयुग में क्या क्या देखेंगे वह नोनइ चीजे ही होंगी। ब्युटी थिंग नम्बु होता है ना। मोर के लिए तो बाबा ने समझाया है उनको भारत का नैशनल बर्ड कहा जाता है। क्योंकि श्री कृष्ण के मुकुट में मोर का पंख दिखाते हैं। मोर और डेल खुबसुरत भी होते हैं। गर्भ भी आंसु से होता है। इसलिए नेशनल बर्ड कहते हैं। ऐसे पक्षी तो बहुत सुन्दर-सुन्दर विलायत तरफ भी होते हैं। अभी तुम बच्चों को सृष्टि के आद मध्य अन्त का राज समझाया है। जो और कोई नहीं जानते। बोलो हम आप को परम पिता परमात्मा की बायोग्राफी सुनाते हैं। रचता है तो जरूर उनकी रचना भी होगी। उनकी हिस्ट्री जागराफी हम जानते हैं। ऊंच ते ऊंच बेहद के बाप का क्या पार्ट हैं यह हम जानते हैं। दुनिया तो कुछ भी नहीं जानती। यह बहुत छी2 दुनिया है। इस समय खुबसुरत से भी मुसीबत है। बच्चियों को देखो कैसे2 भगाते रहते हैं। तुम बच्चों को इस विकारी दुनिया से नफरत होनी चाहिए। यह छी2 दुनिया छी2 शरीर है। हमको तो अब बाप को याद कर अपने आत्मा को प्युर बनाना है। हम सतोप्रधान थे तो सुखी थे। अब तमोप्रधान बने है तो दुखी हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। तुम चाहते भी हो हम पतित से पावन बनें। भल गाते भी है पतित पावन... परन्तु नफरत कुछ नहीं आती। तुम बच्चे समझते हो यह छी2 दुनिया है। नई दुनिया में हमको शरीर भी गुल2 मिलेगा। अभी हम अलकापुरी के मालिक बन रहे हैं। बाकि कथाएं आद तो सब झूठी हैं। भक्ति मार्ग में कितनी किताबें गीताएं आद पढ़ते हैं। मिलता कुछ भी नहीं। पढ़ाने वाले ने तो राजयोग सिखाये विश्व का मालिक बनाया। यह कथा सुनाने वाले क्या करते हैं। फिर जो पढ़ाने वाला आये तब हम विश्व के मालिक बनें। अच्छा जी ओम।